Bihar Board Class 12th Hindi Book Notes Chapter 13 शिक्षा

शिक्षा लेखक परिचय जे. कृष्णमूर्ति (1895-1986)

जीवन-परिचय-
बीसवीं शती के महान भारतीय जीवनद्रष्टा, दार्शनिक, शिक्षामनीषी एवं संत जे. कृष्णमूर्ति का जन्म 12 मई, 1895 के दिन चित्तूर, आन्ध्रप्रदेश के मदनपल्ली नामक स्थान पर हुआ। इनका पूरा नाम जिद्दू कृष्णमूर्ति था। इनकी माता का नाम संजीवम्मा तथा पिता का नाम नारायण जिद् था। दस वर्ष की अवस्था में ही इनकी माता का निधन हो गया था। इस कारण इन्हें बचपन में मिलने वाले प्यार से वंचित रहना पड़ा। लेकिन इन्हें बचपन से ही विलक्षण मानसिक अनुभव हो गए थे। अपनी शिक्षा-दीक्षा के उपरान्त इन्होंने कुछ लेखन कार्य भी किया, लेकिन ये मूलतः वक्ता थे।

इन्होंने व्याख्यान भी किए, जिनके विषय शिक्षा, दर्शन एवं अध्यात्म से संबंधित थे। ये परंपरित शिक्षा प्रणाली से असन्तुष्ट थे, इसलिए उस प्रणाली में फेरबदल चाहते थे। किशोरावस्था में इनका संपर्क सी. डब्ल्यू. लीडबेटर एवं एनी बेसेन्ट से हो गया, जिन्होंने इनका संरक्षण भी किया। बाद में ये थियोसोफिकल सोसाइटी से जुड़े। लीडरबेटर तो इनमें 'विश्व शिक्षक' का रूप देखते थे। सन् 1938 में ये एतडुअस हक्सले के संपर्क में आए। इन्होंने कई देशों की यात्राएँ भी की। ये मूलतः सार्वभौम तत्त्ववेत्ता और परम स्वाधीन आत्मविद् थे अथवा इन्हें प्राचीन स्वाधीनता ऋषियों की परंपरा की एक आधुनिक कड़ी भी माना जा सकता है। मनुष्य को सच्ची शिक्षा प्रदान करने वाले इस महापुरुष का निधन 17 फरवरी, 1986 के दिन ओजई, कैलिफोर्निया में हुआ।

रचनाएँ : जे. कृष्णमूर्ति की प्रमुख रचनाएँ हैं-द फर्स्ट एंड लास्ट फ्रीडम, द ऑनली रिवॉल्यूशन और कृष्णामूर्तिज नोट बुक आदि। इसके अतिरिक्त उनके व्याख्यानों के कई संग्रह विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित हैं।

साहित्यिक विशेषताएं : जे. कृष्णमूर्ति कोई साहित्याकार नहीं थे, बल्कि वे तो एक दार्शनिक, शिक्षामनीषी एवं संत थे। वे प्रायः लिखते नहीं थे, अपित संभाषण करते थे। इनके संभाषणों को ही प्रकाशित किया गया है, जिनसे हमें ज्ञात होता है कि वे भारत के प्राचीन स्वाधीनचेता ऋषियों को परंपरा की एक आधुनिक कड़ी थे।

शिक्षा पाठ के सारांश

जे. कृष्णमूर्ति मानते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य भी यही है। मनुष्य को पूरी तरह भारहीन, स्वतंत्र और प्रज्ञा निर्भर बनाना है। तभी उसमें सच्चा सहयोग, सद्भाव, प्रेम और करुणा सच्चा दायित्व बोध कराती है, हमें गहरा बनाती है। वह हमें सीमाओं और संकीर्णताओं से उबारती है। शिक्षा का ध्येय पेशेवर दक्षता, आजीविका और महज कुछ कर्म, कौशल ही नहीं है। उसका ध्येय हमारा सम्पूर्ण उन्नयन है। कृष्णमूर्ति अपने शिक्षा विषयक प्रयोगधर्मी चिन्तन. में आज की सभी प्रचलित प्रणालियों का भीतर-बाहर से पर्यालोचन करते हैं।

कृष्णमूर्ति प्रायः लिखते नहीं थे। वे बोलते संभाषण करते थे। प्रश्नकर्ताओं को उत्तर देते थे। यह शैली भारत में ही नहीं पूरी दुनिया में अत्यन्त प्राचीन है। 'शिक्षा' नामक संभाषण के जरिए उनके विचारों एवं शिक्षा से लाभ की प्रेरणा मिलती है।

जे. कृष्णमूर्ति मानते हैं कि शिक्षा मनुष्य का उन्नयन करती है। वह जीवन के सत्य, जीवन जीने के तरीके में मदद करती है। इस संदर्भ को देते हुए वे बताते हैं कि शिक्षक हों या विद्यार्थी उन्हें यह पूछना आवश्यक नहीं कि वे क्यों शिक्षित हो रहे हैं। क्योंकि जीवन विलक्षण है। ये पक्षी ये फूल, ये वैभवशाली वृक्ष, ये आसमान, ये सितारे ये सरिताएँ, ये मत्स्य, यह सब हमारा जीवन है। जीवन समुदायों, जातियों और देशों का पारस्परिक सतत् संघर्ष है, जीवन ध्यान है जीवन धर्म भी है। जीवन गूढ़ है, जीवन मन की प्रच्छन्न वस्तुएँ हैं-ईर्ष्याएँ महत्त्वाकांक्षाएँ, वासनाएँ, भय, सफलताएँ चिन्ताएँ।

शिक्षा इन सबका अनावरण करती है। शिक्षा का कार्य है कि वह संपूर्ण जीवन प्रक्रिया को समझने में हमारी सहायता करे, न किस हमें केवल कुछ व्यवसाय या ऊँची नौकरी के योग्य बनाएँ। कृष्णमूर्ति कहते हैं कि हमें बचपन से ही ऐसे वातावरण में रहना चाहिए जहाँ भय का वास न हो नहीं तो व्यक्ति जीवन भर कुठित हो जाता है। उसकी महत्त्वाकांक्षाएँ दब कर रह जाती है। मेधाशक्ति दब जाती है। मेधा शक्ति के बारे में कहते हैं कि मेधा वह शक्ति है जिससे आप भय और सिद्धान्तों की अनुपस्थिति में आप स्वतंत्रता से सोचते हैं ताकि आप सत्य की, वास्तविकता को अपने लिए खोज कर सकें।

पूरा विश्व इस भय से सहमा हुआ है। चूँकि यह दुनिया वकीलों, सिपाहियों और सैनिकों की दुनिया है। यहाँ प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी के विरोध में खड़ा है। किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचने के लिए प्रतिष्ठा सम्मान शक्ति व आराम के लिए संघर्ष कर रहा है। अतः निर्विकार रूप से शिक्षा का कार्य यह है कि वह इस अतिरिक्त और बाह्य भय का उच्छेदन करे।

https://www.evidyarthi.in/